विशेषण

संख्यावाचक विशेषण

जिन शब्दों के द्वारा हम संज्ञा तथा सर्वनाम की विशेषता बताते हैं, विशेषण कहलाते हैं।

जैसे:

श्वेत: पुष्प	सफेद फूल
कृष्ण: सर्प:	काला साँप
गतिमान: गज:	गतिमान (चलता हुआ) हाथी।

श्वेत:, **कृष्ण:** तथा **गतिमान:** उपरोक्त पदों के विशेषण हैं क्योंकि इनसे इन पदों की विशेषताएं बताई गई हैं।

संख्यावाचक विशेषण

ऐसे विशेषण जिनसे हमें पदों की संख्याओं का पता चलता है, संख्यावाचक विशेषण कहलाते हैं।

जैसे: एकम् फलम्	एक फल

द्वे पुस्तके	दो पुस्तकें

त्रीणि कन्दुकानि — तीन गेंदें

संख्यावाचक शब्द

एक से बीस तक

1. एक: एकम्, एका

2. द्वौ, द्वे

3. त्रय: (त्रीणि)

4. चत्वार: (चत्वारि, चतस्र)

5. पञ्च

6. षट्

7. सप्त

8.	अष्ट
9	नव
10.	दश
11.	एकादश
12.	द्वादश
13.	त्रयोदश
14.	चतुर्दश
15.	पञ्चादश
16.	षोडश
17.	सप्तदश
18.	अष्टादश

19.	नवदश, एकोनविंशति:
20.	विंशति:

आप इन संख्याओं का प्रयोग करके सरल वाक्य बना सकते हैं।

आपको हम अब इन संख्यावाची शब्दों के रुपों का परिचय कराएंगे। इनका उपयोग भी विभक्ति एवं लिंग के अनुसार होता है।

एक शब्द

विभक्ति	**पुँल्लिङ्गम्**	**स्त्रीलिंङ्गम्**	**नपुँसकलिंङ्ग**
प्रथमा	एक:	एका	एकम्
द्वितीया	एकम्	एकाम्	एकम्
तृतीया	एकेन	एकया	एकेन
चतुर्थी	एकस्मै	एकस्यै	एकेस्मै
पञ्चमी	एकस्मात्	एकस्या:	एकस्मात्
षष्ठी	एकस्य	एकस्या:	एकस्य

सप्तमी	एकस्मिन्	एकस्याम्	एकस्मिन्

* '**एक**' शब्द के रुप सदा एकवचन में ही होते हैं।

द्वि= दो (द्विवचन में)

विभक्ति	**पुँल्लिङ्गम्**	**स्त्रीलिंङ्गम्**	**नपुँसकलिंङ्ग**
प्रथमा	द्वौ	द्वे	द्वे
द्वितीया	द्वो	द्वे	द्वे
तृतीया	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
चतुर्थी	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
पञ्चमी	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
षष्ठी	द्वयो:	द्वयो:	द्वयो:
सप्तमी	द्वयो:	द्वयो:	द्वयो:

त्रि = तीन

विभक्ति	**पुँल्लिङ्गम्**	**स्त्रीलिंङ्गम्**	**नपुँसकलिंङ्ग**
प्रथमा	त्रय:	तिस्र:	त्रीणि
द्वितीया	त्रीन्	तिस्र:	त्रीणि
तृतीया	त्रिभि:	तिसृभि:	त्रिभि:
चतुर्थी	त्रिभ्य:	तिसृभ्य:	त्रिभ्य:
पञ्चमी	त्रिभ्य:	तिसृभ्य:	त्रिभ्य:
षष्ठी	त्रयाणाम्	तिसृणाम्	त्रयाणाम्
सप्तमी	त्रिषु	तिसृषु	त्रिषु

चत्वार (चार) बहुवचन

विभक्ति	**पुँल्लिङ्गम्**	**स्त्रीलिंङ्गम्**	**नपुँसकलिंङ्ग**
प्रथमा	चत्वार:	चतस्र:	चत्वारि

द्वितीया	चतुरः	चतस्रः	चत्वारि
तृतीया	चतुर्भिः	चतसृभिः	चतुर्भि
चतुर्थी	चतुर्भ्यः	चतसृभ्यः	चतुर्भ्यः
पञ्चमी	चतुर्भ्यः	चतुसृभ्यः	चतुर्भ्यः
षष्ठी	चतुर्णाम्	चतसृणाम्	चतुर्णाम्
सप्तमी	चतुर्षु	चतसृषु	चतुर्षु

पाँच, छः, सात, आठ, नौ, दस इन सबके रुप सभी लिंगों में एक समान ही होते हैं।

विभक्ति

प्रथमा	पञ्च
द्वितीया	पञ्च
तृतीया	पञ्चभिः

चतुर्थी	पञ्चभ्य:
पञ्चमी	पञ्चभ्य:
षष्ठी	पञ्चानाम्
सप्तमी	पञ्चसु

क्रमवाचक एवं गुणवाचक विशेषण

क्रमवाची

अब आप अपने कक्षा तथा अन्य कक्षाओं के छात्रों की गणना क्रमवाचक पूरणी की सहायता से करें।

1.	प्रथम:
2.	द्वितीय:
3.	तृतीय:
4.	चतुर्थ:
5.	पंचम्:

6.	षष्ठ:
7.	सप्तम:
8.	अष्टम:
9	नवम:
10.	दशम:

आइए अब हम कुछ गुणवाचक विशेषणों की बात करें।

गुणवाचक विशेषण

वे शब्द जो संज्ञा तथा सर्वनाम के गुण के अनुसार विशेषता बताते हैं, गुणवाचक विशेषण कहलाते हैं।

जैसे: ज्येष्ठ: भ्राता।

बड़ा भाई।

चतुर: बक:।

चालाक बगुला।

शुष्क: वृक्ष:।

सूखा पेड़।

कनिष्ठ: छात्र:।

छोटे छात्र:।

उच्चः पर्वतः।

ऊँचा पहाड़।